# प्रस्तावना



हिन्दी में नाटक लिख कर उपस्थित करने के लिए कारण बताने की तो कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। कहते हैं कि हिंदी में नाटक अभी इतने नहीं बढ़े कि किसी नये नाटक के प्रकट होने पर उगँली उठाने का अवसर हो। परन्तु मुझे इस का उत्तर अवश्य देना है कि मैंने नाटक लिखने की धृष्टता क्यों की। धृष्टता तो धृष्टता है ही। उस का कारण नहीं बताया जा सकता। उसके लिये क्षमा माँगी जा सकती है।

अपनी धृष्टता के लिये मैं बड़े विनीत भाव से क्षमा माँगता हूँ। मेरा दोष केवल नाटक लिखना ही नहीं है वरन् इस से भी बड़ा है। नाट्यशास्त्र के गूढ़ भेदों से अनभिज्ञ रहते हुए मैंने नाटक लिखने की अनाधिकार चेष्टा ही नहीं की वरन् इस नाटक की शैली व कथानक में ऐसी बातों का प्रवेश किया है जो कदाचित बहुत से महानुभावों को खटकें।

प्रथम तो बहुत से विद्वान इसी से क्रुद्ध होंगे कि किसी इतिहासिक खोज को नाटक के रूप में क्यों उपस्थित किया गया। इस को तो लेख माला के स्वरूप में सामने